सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण '7 A'

Unit II: भाषिक योग्यताओं का विकास

1. श्रव्य – दृश्य एवं मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का विकास

a. भाषायी कौशलों का विकास
b. भाषायी कौशलों का महत्व
c. भाषा के कौशल
d. श्रवण उद्देश्य एवं अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन
e. श्रवण कौशल के लिए श्रव्य सामग्री का प्रयोग
f. भाषायी कौशल - उच्चारण या बोलने का कौशल
g. मौखिक अभिव्यक्ति की आवश्यकता

2. पठन - योग्यता का विकास

a. पठन एवं वाचन शिक्षण कौशल
b. विद्यालय में हिन्दी शिक्षक द्वारा सस्वर वाचन एवं मौन-वाचन के अवसर
c. सस्वर वाचन व मौन वाचन में अन्तर
d. वाचन शिक्षण की विधियाँ
e. वाचन के लिए ध्यान देने योग्य बातें
f. उच्चारण के भेद

3. लिखित अभिव्यक्ति क्षमता का विकास

a. लेखन कौशल
b. लेखन शिक्षण की आवश्यकता
c. लेखन कौशल का महत्व
d. लेखन शिक्षण का समय
e. हिन्दी भाषा की लिखित शिक्षा
f. लिखित अभिव्यक्ति की शिक्षण विधियाँ
g. शुद्ध लेखन तत्व

By. Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

लिखित और अभिव्यक्ति कौशल के उद्देश्य—सुन्दर लेख शिक्षित व्यक्ति की पहचान है। शिक्षित व्यक्ति को हम पढ़ा-लिखा व्यक्ति कहते हैं।

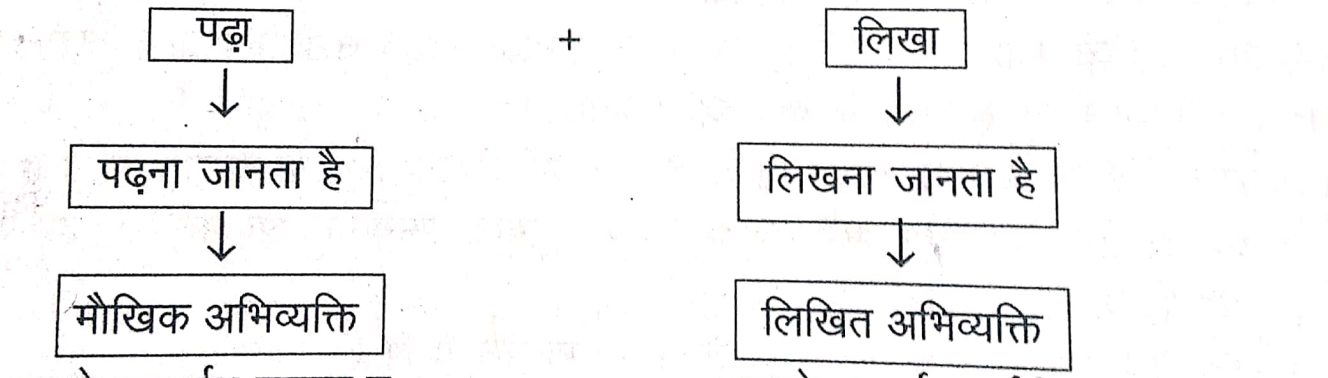

Scanned with CamScanner

लिखित भाषा के उद्देश्यों को हम निम्न प्रकार से क्रमबद्ध रूप में रख सकते हैं–

(1) बालकों की लिपि, शब्द, सूक्ति, लोकोक्ति और मुहावरों का ज्ञान कराना।

(2) बालकों को शुद्ध वर्तनी, वाक्य रचना के नियम, विराम चिन्हों के प्रयोग और साहित्य की विभिन्न विधाओं का ज्ञान कराना।

(3) बालकों को मानव जीवन से परिचित कराना।

(4) बालकों को शुद्ध उच्चारण, उचित आरोह-अवरोह एवं समझपूर्वक सस्वर पठन करने और पूर्ण मनोयोग के साथ समयपूर्वक मौन पाठ करने में निपुण करना।

(5) बालकों को शब्दों, सूक्तियों, लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रसंगानुकूल अर्थ निकालने और पठित अंश का विश्लेषण कर उसके केन्द्रीय भाव को समझने की योग्यता का विकास करना।

(6) बालकों को सुन्दर लेख लिखने, शब्दों की शुद्ध वर्तनी लिखने और व्याकरणसम्मत वाक्य रचना करने में निपुण करना।

(7) बालकों में विषयानुकूल भाषा शैली का प्रयोग करने और उनके विचारों को तार्किक क्रम में अभिव्यक्त करने में निपुण करना।

(8) बालकों को साहित्याध्ययन एवं स्वाध्याय के प्रति रुचि जाग्रत करना।

(9) बालकों में अपने भावों एवं विचारों को लेखबद्ध करने की रुचि उत्पन्न करना।

(10) बालकों में भाषा तथा साहित्य के प्रति आदर का स्थायी भाव बनाना और उनकी सृजनात्मक शक्तियों का विकास कर मौलिक रचना करने की ओर प्रेरित करना।

(11) बालकों को समाज, देश, जाति, धर्म के प्रति संवेदनशील बनाना।

लिखित शिक्षण कौशल के समय अध्यापक को निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए–

(i) सर्वप्रथम बालकों को सुलेख की ओर अधिक ध्यान देना चाहिये तथा वे जो कुछ भी लिखें, ठीक-ठीक लिखें, लिखने की गति की ओर ध्यान बाद में दिया जाय।

(ii) जिस अक्षर को बालक थोड़ा प्रयत्न से लिख लेते हैं, पहले उसको ही चुना जाय, फिर उस अक्षर के द्वारा चार-पाँच वर्णों का निर्माण कराया जाय।

(iii) प्राथमिक अवस्था में बालक बड़े-बड़े अक्षर लिखे, धीरे-धीरे करके उनके आकार को छोटा किया जाये।

(iv) बालक को सर्वप्रथम उसका नाम लिखना ही सिखाया जाय, इसमें उसे अति खुशी होती है। वह प्रसन्नता का अनुभव करता है और वह लेखन कार्य में रुचि लेने लगेगा।

(v) लिखना सिखाने में सदैव सरल से कठिन का सूत्र का ध्यान रखा जाय।

Scanned with CamScanner